शन्नो और उसके 100 हाथी

गीता धर्मराजन
चित्राँकनः अतनु रॉय

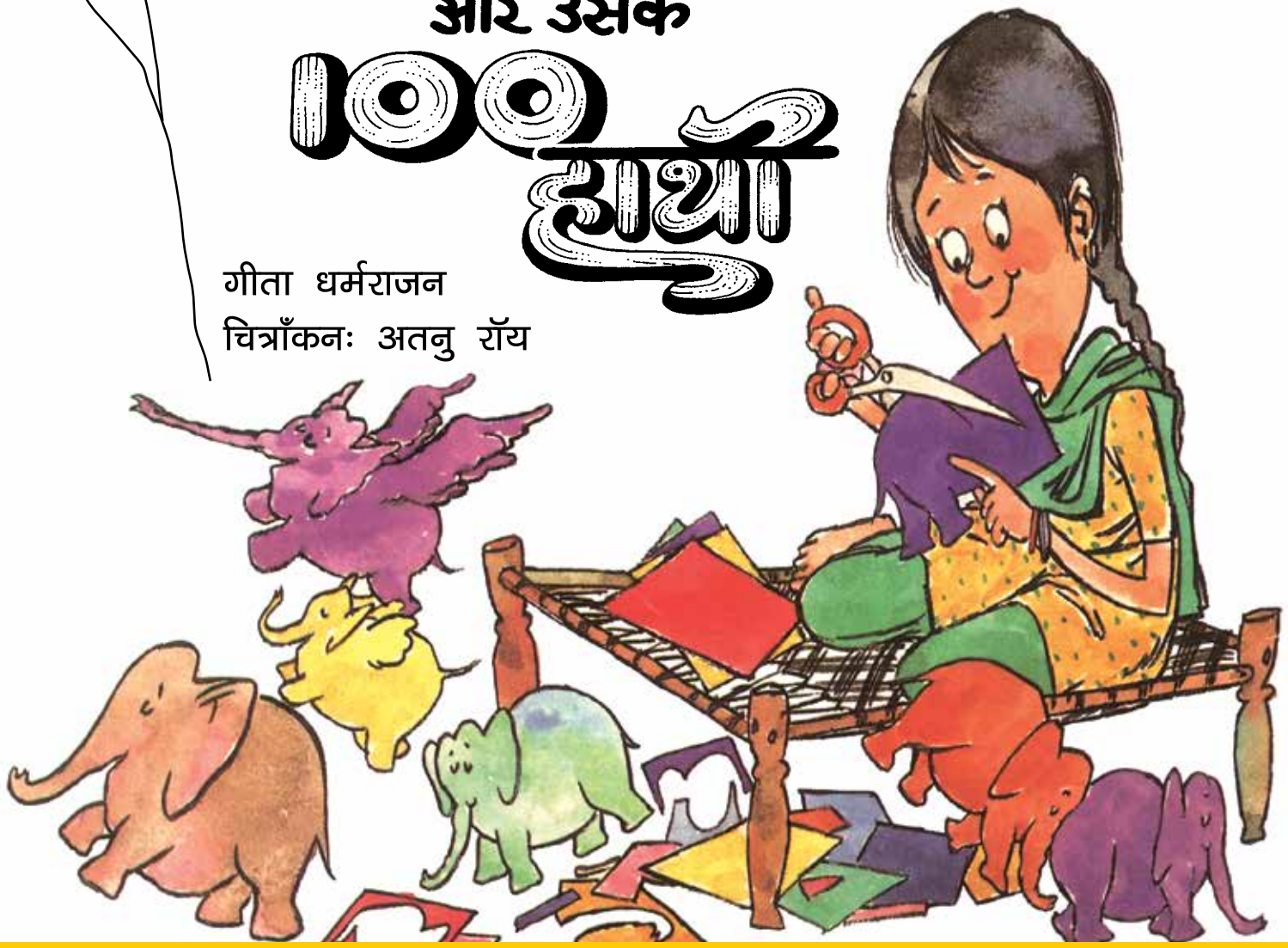

कथा की 300एम थिंकबुक

“अरे! स्कूल की छत तो फिर से टपकने लगी” चिन्तित स्वर में शन्नो की टीचर ने कहा।

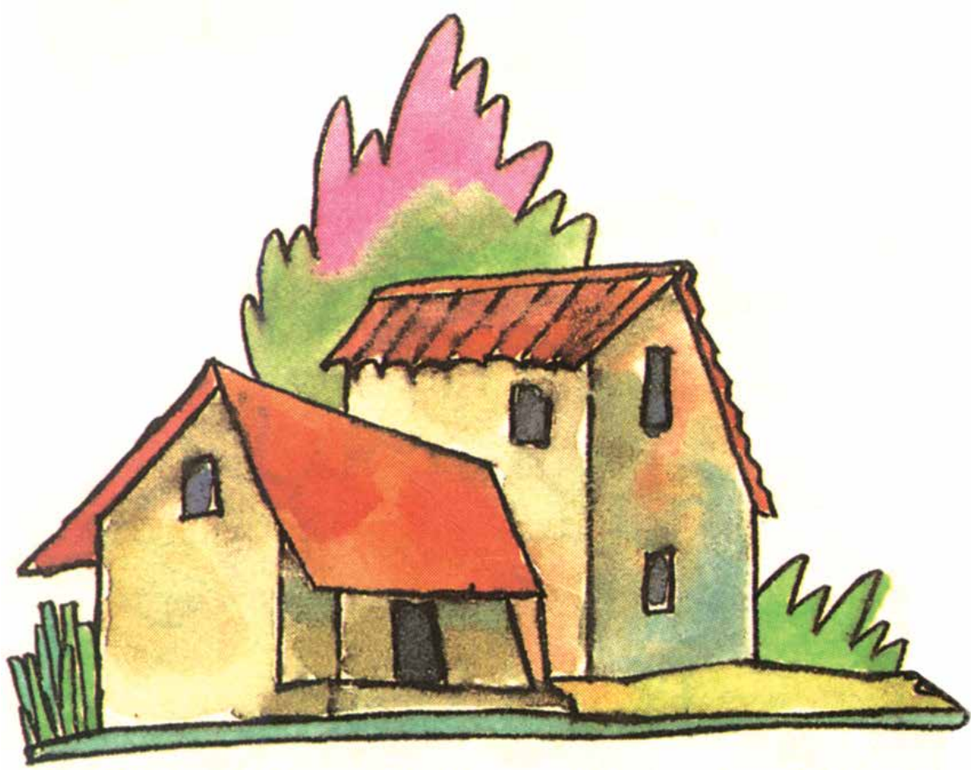

“छत की मरम्मत कराने के लिए हम सबको पैसे इकट्ठे करने होंगे। क्यों न इस बार हम एक मेला लगाएँ?

हममें से हर एक कुछ
न कुछ बनाकर लाएगा
और मेले में बेचेगा।

इस तरह मज़ा तो आएगा ही,
साथ ही कुछ पैसे भी इकट्ठे
हो जाएँगे,” शन्नो बोली।

सबको शन्नो की यह
बात अच्छी लगी!

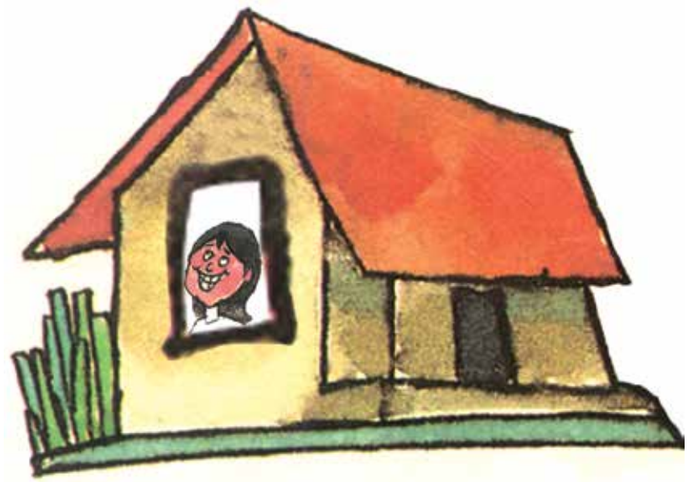

सीता की माँ ने कहा कि वे मेले के लिए जलेबियाँ बना देंगी।

अहमद के अब्बा जो कुम्हार हैं, उन्होंने बहुत सारे मिट्टी के खिलौने बनाने का वायदा किया।

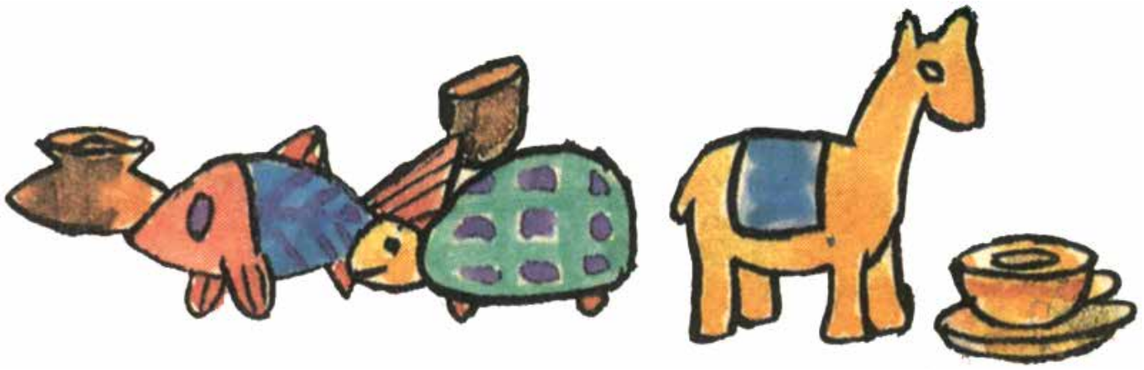

और शन्नो ?

“मेरे पास अभी बिल्कुल समय नहीं है,” शन्नो की माँ ने कहा, “तुम खुद ही कुछ बना लो, बेटी।”

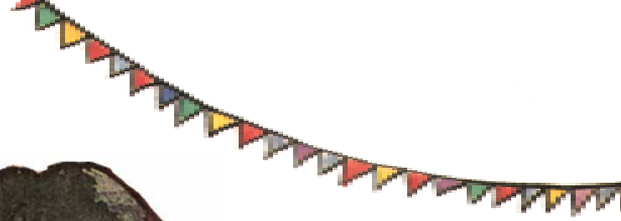

शन्नो चिन्ता में पड़ गई।

वह सोचने लगी कि, वह मेले के लिए क्या बनाकर ले जा सकती है। तभी उसे एक विचार आया!

और ...

उस रात, नन्हे चाँद ने आकाश से
झाँककर, शन्नो को अपनी चारपाई पर,
कागज़ के टुकड़े काटते देखा।

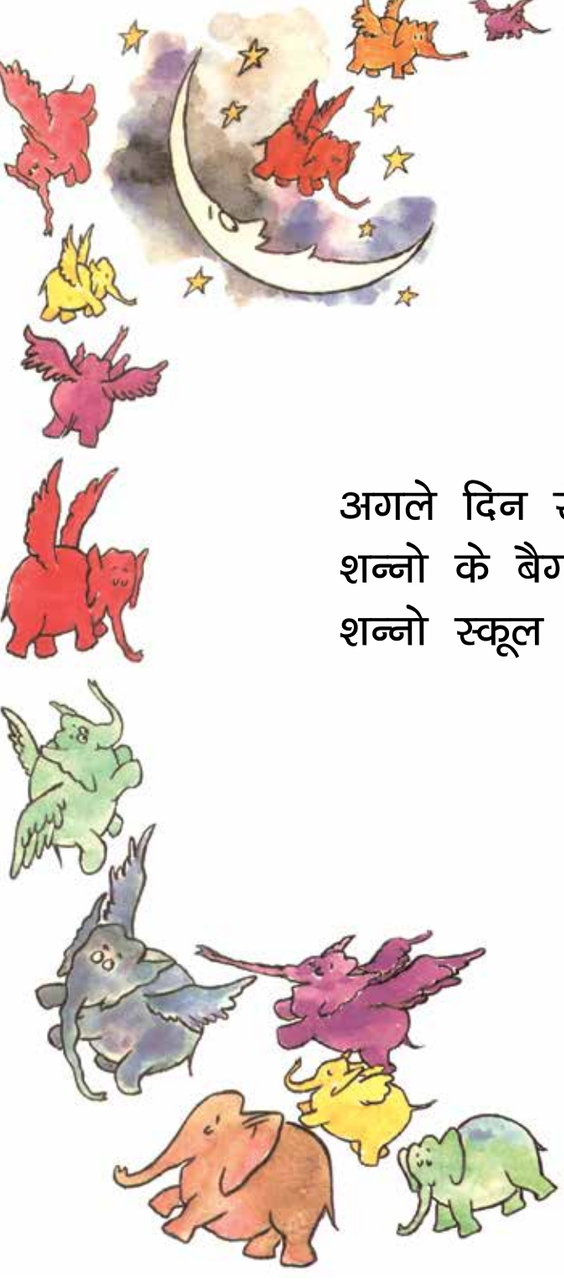

अगले दिन रंगीन कागज़ के सौ हाथी शन्नो के बैग में थे। कूदती-फाँदती शन्नो स्कूल की ओर चल दी।

पर मासूम शन्नो को मालूम ही न था कि रात नन्हे चाँद ने एक जादुई मंत्र पढ़ा था।

तभी तो शन्नो एक ही रात में सौ हाथी बना सकी थी!

और अब उसी जादू के असर से उन हाथियों के पंख उग आए थे।

देखते ही देखते आसमान में झूमते-नाचते हाथी ही हाथी छा गए।

इतने सारे हाथी आसमान में देखकर नन्ही सीता बोली, “टीचर दीदी बहुत नाराज़ होंगी।”

हाँ सच! टीचर दीदी तो गुस्से से आग–बबूला हो रही थीं।

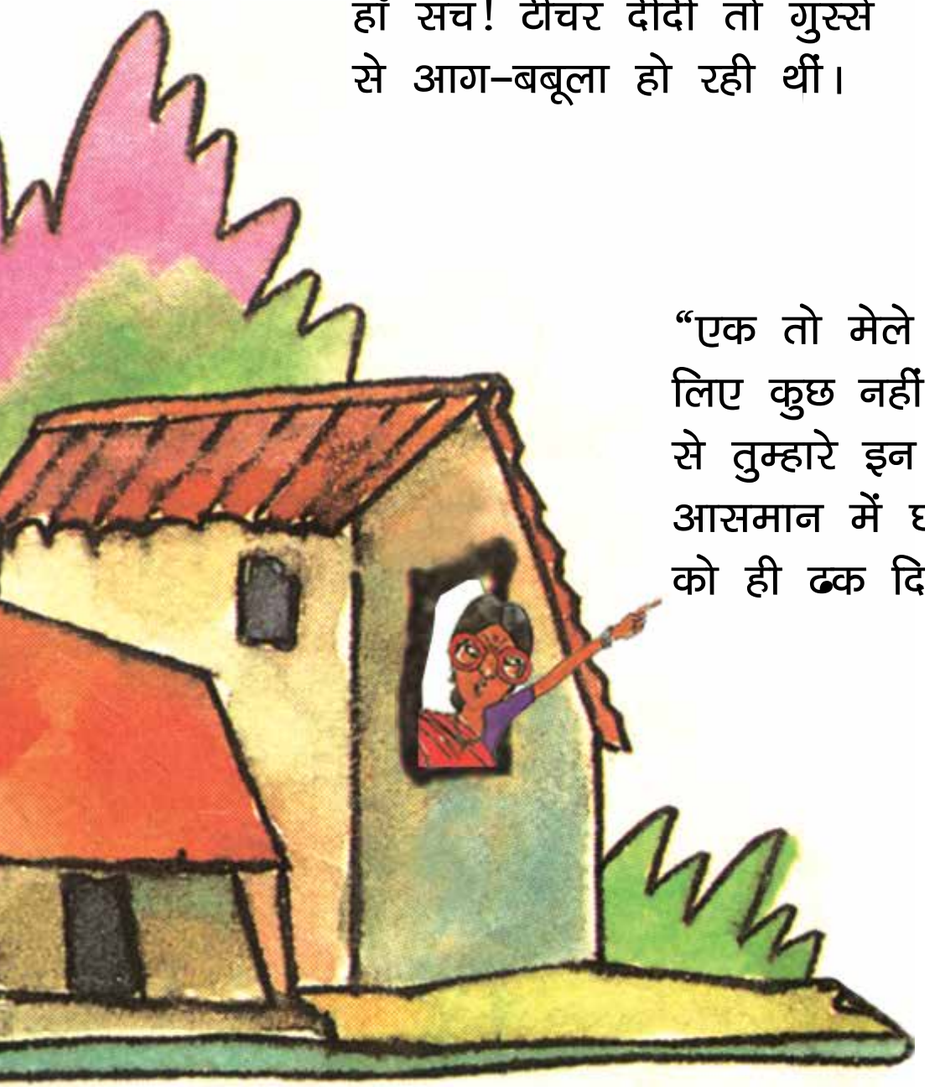

“एक तो मेले में बेचने के लिए कुछ नहीं लाई, ऊपर से तुम्हारे इन हाथियों ने, आसमान में छाकर, सूरज को ही ढक दिया है!

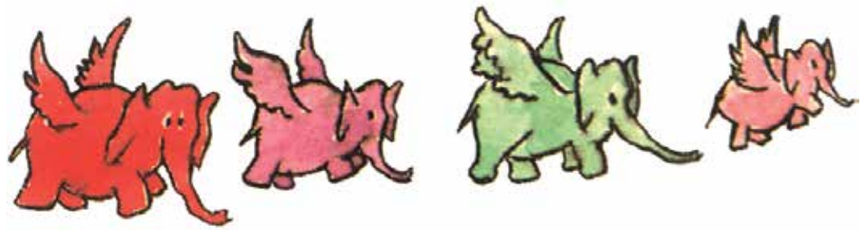

अब भला कौन आएगा हमारे मेले में?”

शन्नो की आँखों से मोटे–मोटे आँसू टपकने लगे।

अहमद को बहुत बुरा लगा।

उसने शन्नो का मन बहलाने के लिए कहा, “वैसे भी कौन आता है इस छोटे-से गाँव के छोटे-से स्कूल के छोटे-से मेले में?”

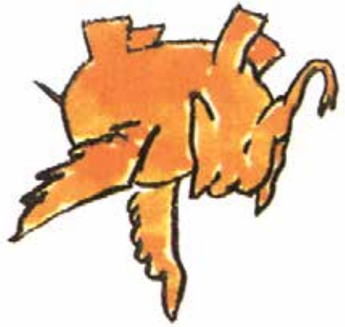

अचानक सीता चिल्लाई, “देखो! देखो! हमारे गाँव की ओर कितने सारे लोग आ रहे हैं!”

लोगों ने कहा, “हमने
आसमान में तुम्हारे हाथियों
को उड़ते हुए देखा।

बहुत ख़ुश और बेफ़िक्र
लग रहे थे वे। क्या हम कुछ
हाथी ख़रीद सकते हैं?”

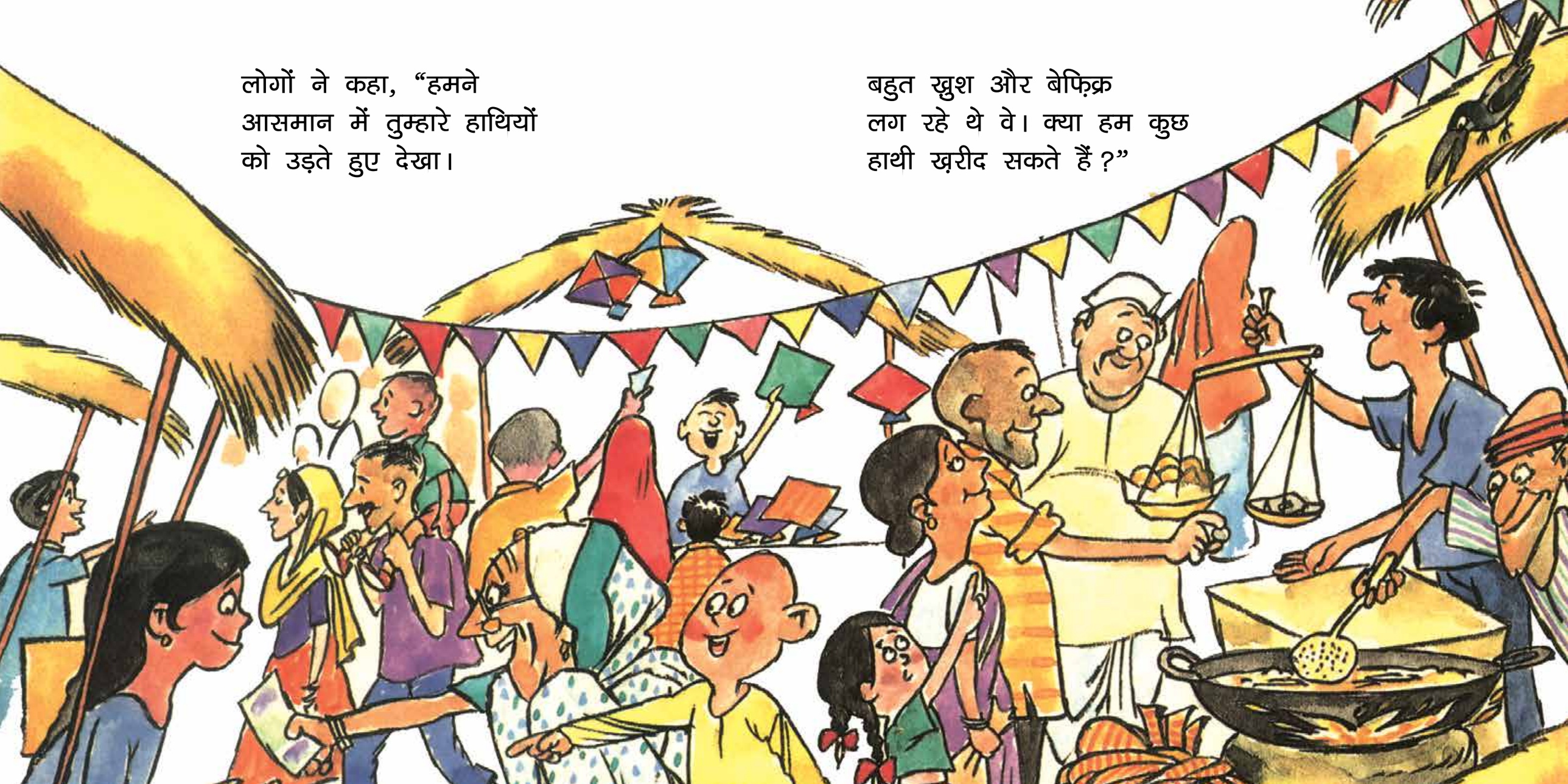

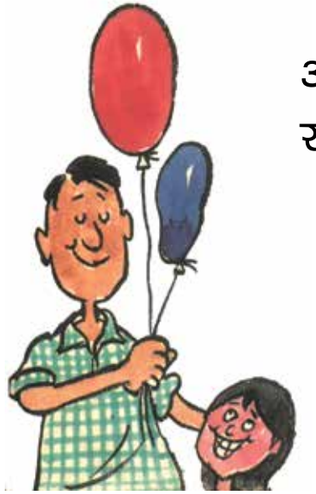

और देखते ही देखते मेले की
सारी चीज़ें बिक गईं!

“अब हम अपने स्कूल की
नई छत बनवा सकते हैं।

आप हमें कब तक नई खपरैल
दे सकेंगे?” टीचर दीदी ने शन्नो
की तरफ मुस्काते हुए, अहमद के
अब्बा से पूछा।

और शन्नो के हाथी?

अरे! कल ही तो मैंने एक हाथी को
आसमान में उड़ते हुए देखा था।
क्यों, तुमने नहीं देखा क्या?

थोड़ी जानकारी थोड़ा मज़ा!

शन्नो के हल्के फुल्के कागज़ के हाथी तो एक-एक करके आसमान में उड़ गए, पर क्या सच में हाथी उड़ सकते हैं?

क्या तुम जानते हो?

हाथी पृथ्वी पर चलनेवाला सबसे बड़ा जानवर है!

एक साधारण हाथी का वजन 3-5 टन तक होता है!

हाथी अपने कान अपने शरीर को ठंडा रखने के लिए हिलाते हैं।

हाथी अपनी सूंड से भारी से भारी लकड़ी के गट्ठर या मटर के दाने जैसी छोटी से छोटी चीज़ भी उठा सकते हैं।

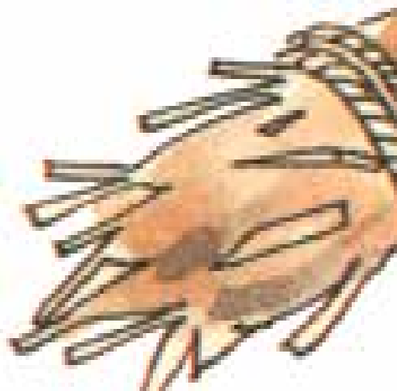

चित्र में दिखाए गए 1 से 27 तक के बिंदु रेखा खींचकर मिलाओ और रंग भरो। फिर लिखो इस जानवर के अंगों के नाम।

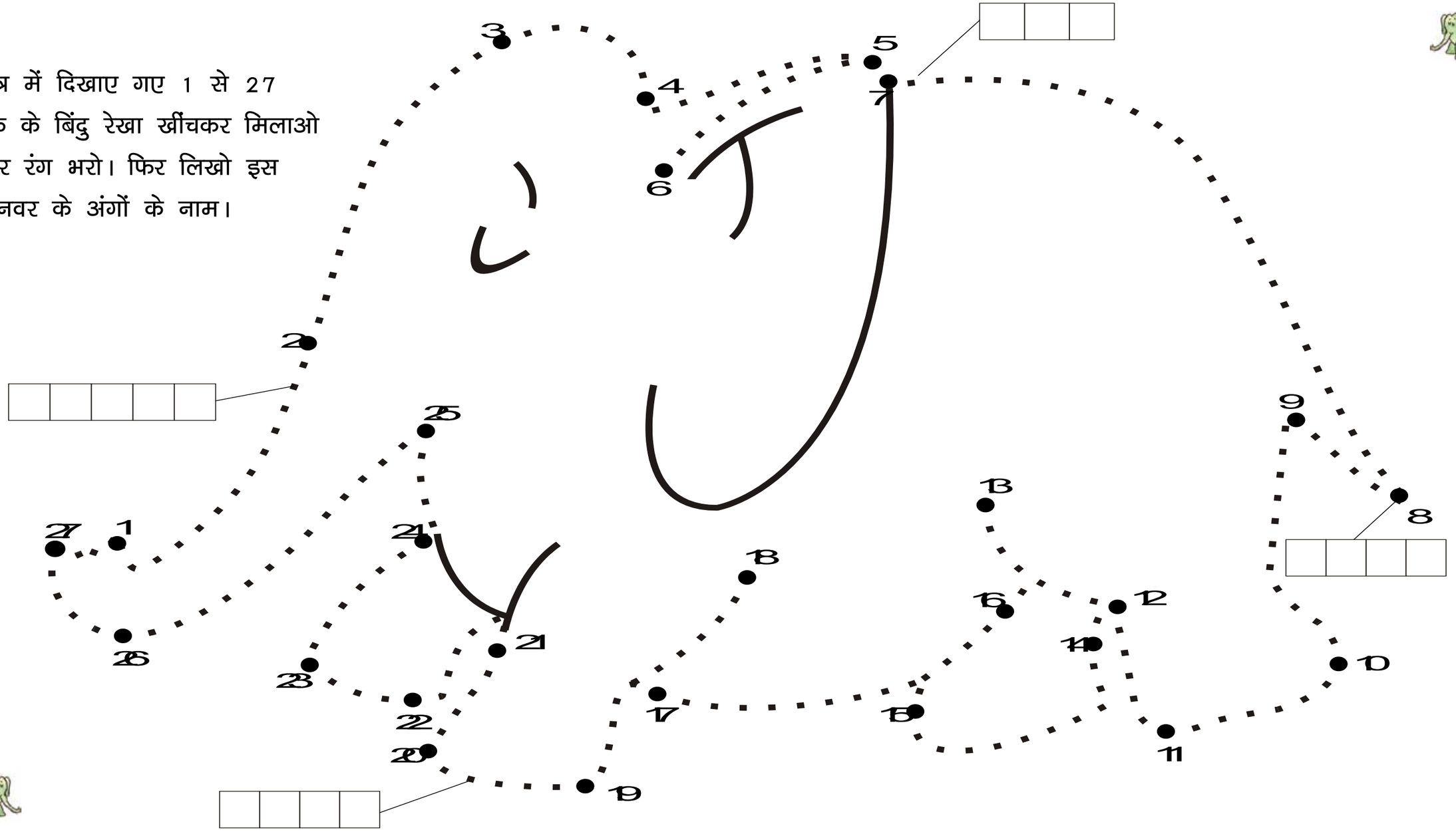

xhrk /kejkt u बच्चों के लिए कहानियाँ लिखना पसंद करती हैं। वह *टारगेट* पत्रिका और पेन्सिलवेनिया विश्वविद्यालय की पत्रिका *पेन्सिलवेनिया गज़ेट* की संपादक भी रह चुकी हैं। साहित्य एवं शिक्षा में किये गये इनके अद्वितीय योगदान के लिए इन्हें सन् 2012 में राष्ट्रीय सम्मान पद्मश्री से सम्मानित किया गया है।

vrq jk; ने एक सौ से भी अधिक बच्चों की किताबों के लिए चित्रकारी की है। उन्होंने अपना अधिकतर कल्पना कौशल बाल साहित्य को समर्पित किया है। उत्कृष्ट रंगों से सजी उनकी विस्तृत छवियाँ नन्हे पाठकों के मन को छू लेती हैं। फिर यह कोई अचम्भे का कारण नहीं है कि अतनु, जो कि *इंडिया टुडे* में राजनैतिक कार्टूनिस्ट रह चुके हैं, को बच्चों की चित्रकारी के लिए कई पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है जैसे चिल्ड्रन्स चॉइस अवॉर्ड फ़ॉर बुक इलस्ट्रेशन और इब्बी सर्टिफ़िकेट ऑफ़ ऑनक फ़ॉर इलस्ट्रेशन। रॉय का स्टूडियो गुड़गाँव में है।

क कथा

कथा एक विश्व स्तर पर मान्यता प्राप्त गैर–लाभकारी संस्था है जो कि शिक्षा और साहित्य के क्षेत्र में सन् 1988 से काम कर रही है। गरीबी में रहने वाले बच्चों की शिक्षा को बढ़ावा देने का व उनके लिए विशेष किताबें बनाने का कथा के पास लगभग 30 साल का अनुभव है।

"भारत के मुकुट पर एक शैक्षिक हीरा!" **– नाओकी शिनोहरा, उपप्रबंध निर्देशक, आईएमएफ**

"कथा का काम इस विचार से प्रेरित है कि बच्चे अपने समुदायों में स्थायी बदलाव ला सकते हैं। जैसे कि बच्चे करते हैं (कथा की किताबों में)।" **– पेपरटाइगर्स**

"कथा बच्चों के लिए नर्म दिल है। तभी तो कथा बच्चों के लिए इतनी खूबसूरत किताबें बनाती है।" **– टाइम आउट**

"कथा दुनिया भर में उन रचनात्मक संगठनों के लिए एक उदाहरण है जो शहरों के सुधार के लिए काम करते हैं।"

– चार्ल्स लैंड्री, ***द आर्ट ऑफ़ सिटी मेकिंग***

हिंदी संस्करण 2021

कृति स्वामित्व © कथा, 1994, 2021
मौलिक लेखन कृति स्वामित्व © व्यंकटेश माडगुलकर
चित्राँकन कृति स्वामित्व © कथा
स्वत्वाधिकार सुरक्षित। प्रकाशक की आज्ञा के बिना इस किताब के किसी भी भाग को छापना अथवा अन्य किसी पुनः प्रयोग विधि के रूप में प्रतिकृति या इस्तेमाल वर्जित है।

नयी दिल्ली द्वारा मुद्रित

हमारा लक्ष्यः हर बच्चा आनंद और अर्थवत्ता के लिए पढ़ें।

कथा एक पंजीकृत आलंभकारी संस्था है जिसकी स्थापना 1988 में किया गया था। कथा शिक्षा और साहित्य के क्षेत्र में काम करती है। कथा का मुख्य उद्देश्य है बच्चों और बड़ों में पढ़ने में रूचि एवं इससे मिलती खुशी को बढ़ावा देना। कथा 1,00,000 से भी अधिक बच्चों के साथ काम करती है ताकि वे मजे के लिए और कक्षा स्तर पर पढ़ सकें।

ए–3 सर्वोदय एन्क्लेव, श्री औरोबिन्दो मार्ग, नयी दिल्ली – 110017
दूरभाषः 4141 6600 - 4141 6624 - 4182 9998
इ–मेलः marketing@katha-org
वेबसाइटः www-katha-org | www-books-katha-org

इस किताब की बिक्री में मिली राशि का 10% बच्चों की शिक्षा के लिए कथा स्कूल को दिया जाएगा।
कथा नियमित रूप से उस लकड़ी के बदले पेड़ लगाती है, जिससे हमारी किताबों को छापने का कागज बनता है।

यह सभी आई.एल.आर किताबें हैं

आनंद और समझने के लिए पढ़ो

FOR OUR BOOKS

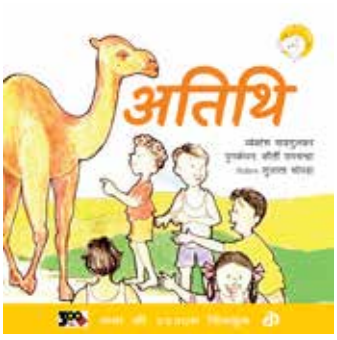

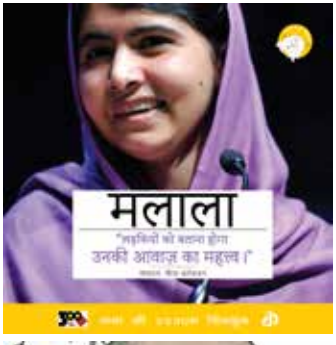

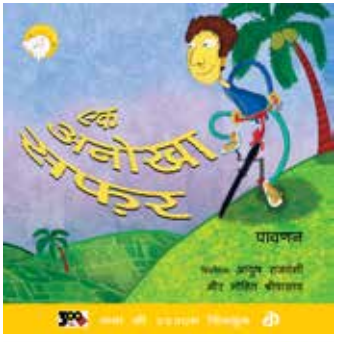

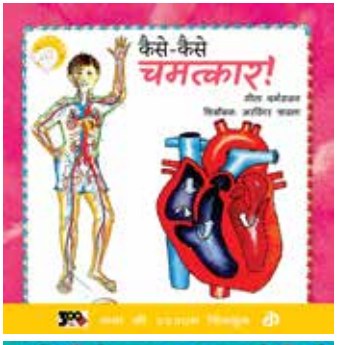

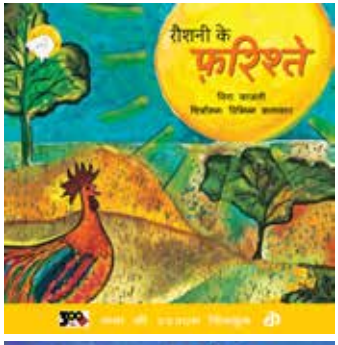

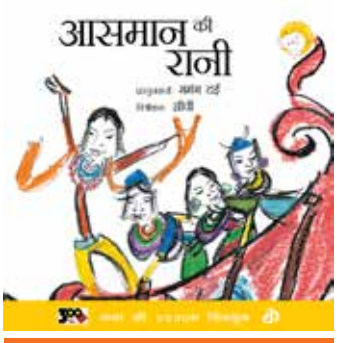

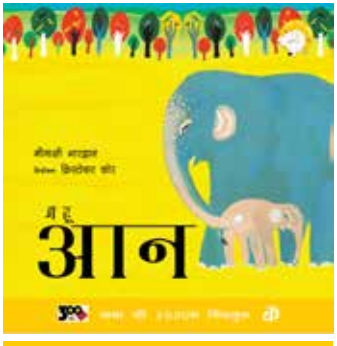

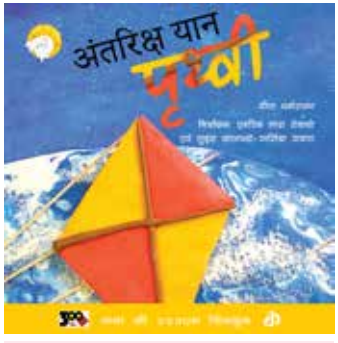

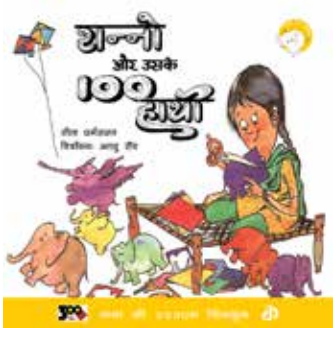

www.books.katha.org

"[Katha]...a special and unique moment in Indian Publishing history."

— The iconic The Economic Times

for children

a katha book

ISBN 978-93-88284-81-3

9 789388 284813

www.katha.org

₹ xxx

इसकी तीन श्रृंखला में